بسم الله الرحمن الرحيم

मदीना मुनव्वरा : मस्जिद-ए-नबवी ﷺ की ज़ियारत

Version 1.1

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

जब आप मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हों, तो सफर भर दुरूदे शरीफ़ की कसरत करते रहें, यहाँ तक कि मुमकिन हो तो पूरे सफर में वुज़ू की हालत में रहने की कोशिश करें। ज़बान पर दुरूद व सलाम और अल्लाह तआला का ज़िक्र जारी रखें। मदीना मुनव्वरा पहुँचने के बाद सबसे पहले अपना सामान होटल में रखें। इसके बाद ग़ुस्ल करें, खुशबू लगाएँ, साफ़-सुथरे और उम्दा कपड़े पहनें, और दिल में अदब व मोहब्बत के जज़्बात के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोज़ा-ए-मुबारक की हाज़िरी के लिए रवाना हों।

अगर कोई ख़ातून अय्याम (हैज़) में हो तो वह मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अंदर दाख़िल नहीं हो सकती और न ही नमाज़ अदा कर सकती है, लेकिन परेशान होने की ज़रूरत नहीं। वह मस्जिद के बाहर बैठकर दुरूद व सलाम पढ़ती रहे, अलबत्ता मस्जिद के अंदर दाख़िला उस वक़्त तक मुनासिब नहीं जब तक वह पाक न हो जाए।

जब आप इन्शा अल्लाह मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में दाख़िल हों तो यह दुआ पढ़ें:

بِسْمِ اللَّهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ۔اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي، وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

बिस्मिल्लाह, वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह। अल्लाहुम्माग़फ़िर ली ज़ुनूबी, वफ्तह ली अबवाबा रहमतिक।

अल्लाह के नाम से, और दरूद व सलाम हो अल्लाह के रसूल पर। ऐ अल्लाह, मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

और कोशिश करें, अगर वक़्त हो, मौक़ा हो और औक़ात-ए-मक्रूह भी न हों तो सबसे पहले रियाज़ुल जन्ना में 2 रकअत नफ़्ल नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद की नियत से अदा करें (पहली रकअत में सूरह अल-काफ़िरून और दूसरी रकअत में सूरह अल-इख़लास पढ़ें)। अगर रियाज़ुल जन्ना में जगह न मिले तो मस्जिद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में जहाँ भी जगह मिल जाए, 2 रकअत नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद की नियत से अदा करें।

तहिय्यतुल मस्जिद से फ़ारिग होकर ज़ियारत के लिए क़तार में शामिल हो जाएँ। अब आप दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए बाबुस्सलाम की तरफ़ से हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मवाजहा शरीफ़ के सामने जाएँ, लेकिन इतनी अदब से चलें गोया कि आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहे हों। क़दम आराम से रखें, क़दमों की धप-धप की आवाज़ भी पैदा न हो, क्योंकि वह एक ऐसी जगह है जहाँ आवाज़ ऊँची हो जाए तो इंसान के आमाल हब्त (बरबाद) हो जाते हैं। दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए आहिस्ता-आहिस्ता चलें। जब मवाजहा शरीफ़ के सामने आ जाएँ जहाँ बिल्कुल गोल दायरा बना हुआ है और ऊपर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम की आयत मुबारक लिखी हुई है — वहाँ जब आप खड़े होंगे तो गोया आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिल्कुल सामने खड़े हैं।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

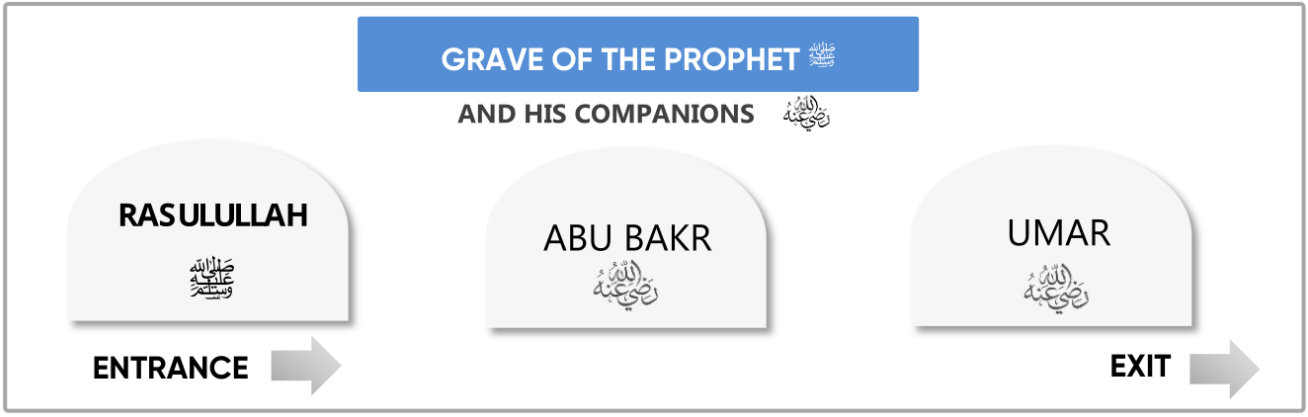

जब आप सामने जाएं सामने अदब से खड़े हों, हाथ बाँधने की ज़रूरत नहीं है, हाथ खुले रखें, हाथ बाँधना अल्लाह के दरबार के लिए होता है, हज़ूर पाक के सामने हाथ नहीं बाँधें और इतना दूर भी खड़े न हों और इतना क़रीब भी खड़े न हों और आवाज़ जो है वो इतनी ऊँची भी न हो और इतनी आहिस्ता भी न हो, फिर कहेंगे:

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

अस्सलामु अ़लैका अय्युहन नबीय्यु व रह़मतुल्लाही व बारकातुह

ऐ नबी आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों।

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ

अस्सलातु वस्सलामु अ़लैका या हबीबल्लाह

ऐ अल्लाह के प्यारे, आप पर सलामती और बरकतें हो।

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللَّهِ

अस्सलातु वस्सलामु अ़लैका या ख़ैर खल्किल्लाह

ऐ अल्लाह की बेहतरीन मख़लूक़, आप पर सलामती और बरकतें हो।

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَاتَمَ الْأَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِينَ

अस्सलातु वस्सलामु अ़लैका या ख़ातमल-अनबिया वल-मुर्सलीन

सलाम हो आप पर, ऐ ख़ातमन-नबीयीन व मुरसलीन।

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ

अस्सलातु वस्सलामु अ़लैका या सैय्यिदल- अव्वलीना वल-आख़िरीन

सलाम हो आप पर, ऐ साहिबे अव्वल व आख़िर।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ

अस्सलातु वस्सलामु अ़लैका या रह़मतन लिल-आलमीन

सलाम हो आप पर, ऐ रहमतुल्लिल आलमीन।

السَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلَى خُلَفَائِكَ، وَعَلَى أَصْحَابِكَ، وَأَزْوَاجِكَ الْمُطَهَّرَاتِ، رِضْوَانُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ

अस्सलामु अ़लैका व अ़ला खुलफाइका, व अ़ला अस्हाबिका, व अज़वाजिकल-मुतह़हरात, रिज़्वानुल्लाहि अ़लैहिम अजमईन।

सलाम हो आप पर और आपके जानशीनों पर, और आपके सहाबा-ए-किराम पर, और आपकी पाकीज़ा बीवियों पर — ख़ुदा उन सब से राज़ी हो।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَشْهَدُ أَنَّ رَسُولَكَ قَدْ بَلَّغَ الرِّسَالَةَ، وَأَدَّى الْأَمَانَةَ، وَنَصَحَ الْأُمَّةَ، وَعَبَدَ رَبَّهُ حَتَّى أَتَاهُ الْيَقِينُ

अल्लाहुम्म इन्नी अशहदु अन्ना रसूलका क़द बल्लग़र-रिसालह, व अद्दाल-अमानह, व नसह़ल-उम्मह, व अबद रब्बहु ह़त्ता अ़ाताहुल-यक़ीन।

ऐ अल्लाह! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे रसूल ने पैग़ाम पहुँचा दिया, अमानत को पूरा किया, क़ौम को नसीहत की और अपने रब की इबादत की यहाँ तक कि उसे यक़ीन आ गया।

وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

वस्सलामु अ़लैका व रह़मतुल्लाही व बरकातुह।

और सलामती, ख़ुदा की रहमतें और बरकतें आप पर हों।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

अब दो क़दम आगे चलें और फिर खड़े हो के सलाम पढ़े:

ٱلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيفَةَ رَسُولِ ٱللَّهِ

अस्सलामु अलैक या ख़लीफ़ता रसूलुल्लाह

आप पर सलाम हो, ऐ रसूल अल्लाह ﷺ के खलीफा।

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ الغَارِ وَالمَدَارِ

अस्सलामु अलैक या साहिबल ग़ार वलमदार

आप पर सलाम हो, ऐ ग़ार के साथी और उम्मत की राहनुमाई फ़रमाने वाले।

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَبِي بَكْرٍ ٱلصِّدِّيقِ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُ، جَزَى ٱللَّهُ أَنَّ أُمَّةَ مُحَمَّدٍ أَحْسَنَ ٱلْجَزَاءِ

अस्सलामु अलैक या अबी बक्र अस्सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, जज़ा अल्लाहु अन उम्मत मुहम्मदीन अहसनल जज़ा

आप पर सलाम हो, ऐ अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, अल्लाह तआला उम्मते मुहम्मदिया ﷺ की तरफ़ से आपको बेहतरीन जज़ा अता फ़रमाए।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

इस के बाद आगे जाएं फिर पढ़ें गे:

ٱلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا أَمِيرَ ٱلْمُؤْمِنِينَ عُمَرَ بْنَ ٱلْخَطَّابِ، أَنَّ ذِكْرَ ٱلْحَقِّ وَٱلصَّوَابِ

अस्सलामु अ़लैका या अमीर अल्मुमिनीन उमर ब्न अल्खत्ताब, अ़न्ना ज़िक्रील हक़्क़ि वअ्स्सवाब

आप पर सलाम हो, ऐ अमीरुल मोमिनीन उमर बिन खत्ताब, कि आपका तज़्किरा हक़ और सवाब (हक़ और सच बात) के साथ जुड़ा हुआ है।

ٱلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيرَ ٱلنَّبِيِّ ٱلْمُصْطَفَى

अस्सलामु अ़लैका या वज़ीर अन्-नबी अल्मुस्तफा

आप पर सलाम हो, ऐ नबी-ए-मुस्तफा ﷺ के वज़ीर (यानी मआविन व दस्त-ए-रास्त)।

ٱلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُولُ ٱللهِ

अस्सलामु अ़लैका या साहिब रसूलुल्लाह

आप पर सलाम हो, ऐ रसूलुल्लाह ﷺ के साथी।

ٱلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ ٱللهِ وَبَرَكَاتُهُ

अस्सलामु अ़लैका व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु

आप पर सलाम, अल्लाह की रहमते और बरकतें हों।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

इस से फिर आगे जाएं फिर अपना रुख क़िबले की तरफ़ कर लें, क्योंकि सलात व सलाम नबी का हक़ है और दुआ सिर्फ़ अल्लाह का हक़ है, फिर हाथ उठा के अल्लाह से लंबी लंबी दुआएं करें कि या अल्लाह हमारी ये हाज़िरी क़बूल फ़रमा।

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ زِيَارَةَ رَسُولِكَ، اَللّٰهُمَّ اَرْزُقْنَا شَفَاعَةَ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

अल्लाहुम्मा तक़ब्बल ज़ियारता रसूलिका, अल्लाहुम्म अर्ज़ुक़ना शफ़ा'अता नबीय्यिका मुहम्मदीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

ऐ अल्लाह अपने रसूल की ज़ियारत को क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह हमें अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शफ़ा'अत अता फ़रमा।

अपने वालिदैन के लिए दुआएं करें, अपने लिए दुआएं करें, अपने ख़ानदान के लिए दुआएं करें, आलम-ए-इस्लाम के लिए दुआएं करें, ख़ास तौर पे मुसलमान जो हमारे कश्मीर में हैं, फ़िलस्तीन में हैं, हिंद में हैं, सिंध में हैं, अरब में हैं, अजम में हैं, अफ़ग़ान में हैं — उनकी जान, माल, इज़्ज़त, आबरू के लिए दुआएं करें।